अध्याय 16

हमारा अतीत

हम जिस समाज में रहते हैं उसके परिवेश की हमें आदत पड़ जाती है। हम यह मान लेते हैं कि दुनिया हमेशा ऐसी ही रही है। हम यह भूल जाते हैं कि जीवन हमेशा वैसा नहीं था जैसा हमें आज दिखता है। क्या हम ऐसी दुनिया की कल्पना कर सकते हैं जहाँ आग न हो, जब खेती–बाड़ी का आविष्कार न हुआ हो ? उस समय का जीवन कैसा रहा होगा जब लोग यात्राएँ तो कर लेते थे पर सड़कें नहीं थी ? यातायात के आधुनिक साधन नहीं थे, उस समय के जीवन और परिस्थितियों की जानकारी प्राप्त करना ही हमारे अतीत को जानना और पहचानना है।

गतिविधि–

प्राचीन जीवन कैसा रहा होगा ? इसके बारे में सोचें और चर्चा करें।

इतिहास के स्रोत

हमारे अतीत में जो ज्ञान के भण्डार हैं, उसका पता हमें पुरातन सामग्री, शिला–लेख आदि से चलता है। हमारे देश में विकसित नदी–घाटी सभ्यताओं की जानकारी भी हमें वहाँ खुदाई में प्राप्त टूटे भवनों, सिक्कों, बर्तनों, पत्थर व धातु के औजारों, मूर्तियों और अनेक ऐसी चीजों से मिलती हैं, जिनका हजारों वर्षों पूर्व हमारे पूर्वज उपयोग कर रहे थे। हजारों वर्ष पूर्व अनेक प्राचीन नगर, गाँव नष्ट हो गए अथवा उनके मकान धरती में समा गए। उनकी खुदाई में वे सभी चीजें निकली जो उनके काम आती थीं। यही चीजें इतिहास के स्रोत के रूप में मानी जाने लगी। इन ऐतिहासिक स्रोतों को निम्नलिखित भागों में बाँट सकते हैं–

आदिमानव

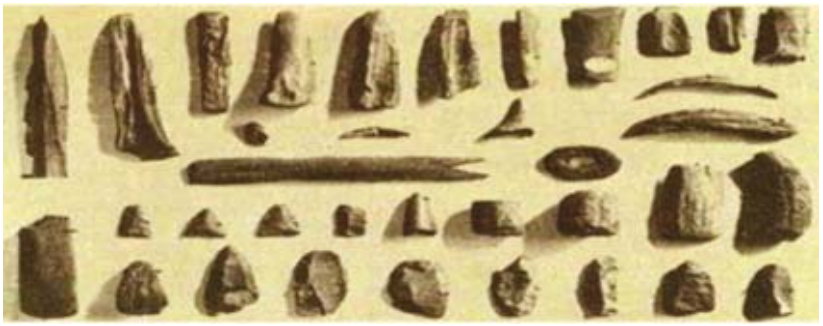

प्राचीन पत्थर के औजार

पुरातात्विक स्रोत

पुरातात्विक स्रोत वे हैं, जो पुराने हैं और पुरातत्ववेताओं द्वारा इकट्ठे किए गए हैं। पत्थर या धातु पत्र पर जो लेख उत्कीर्ण किए जाते हैं, उन्हें शिलालेख कहते हैं। प्राचीनकाल के भवन, स्मारक, किले, सिक्के, शिलालेख आदि सभी पुरातात्विक स्रोत कहलाते हैं।

साहित्यिक स्रोत

साहित्यिक स्रोत वे हैं, जो किसी भी भाषा में लिखित रूप में प्राप्त हैं। कहानियाँ, कथाएँ व किसी भाषा एवं लिपि के ग्रन्थ साहित्यिक स्रोत कहलाते हैं।

वंशावलियाँ

भाषा, लिपि, विभिन्न कलाएँ, साहित्य, इतिहास–लेखन परम्परा जैसे मूल्य संवाहकों के साथ ही वंशावली लेखन की एक अनोखी परम्परा भी हमारे पूर्वजों द्वारा विकसित की गई थी, जो इतिहास को जानने का एक सरल माध्यम हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक का सम्पूर्ण लेखा जोखा वंशावली लेखकों की बहियों में लिखा जाता है।

राव (बड़वा), भाट, बारोट, जागा, तीर्थ–पुरोहित (पण्डे) रानीमंगा, हेलवा, पंजीकार आदि अनेक समुदायों ने इस वंशावली लेखन द्वारा भारतीय नृवंश का सम्पूर्ण विवरण अपनी बहियों में संजोए रखा है। भारत में वंशावली लेखकों के पास हर जाति का इतिहास सुरक्षित है।

पुरालेख एवं विदेशी यात्रियों के वर्णन

ऐसे सरकारी, गैर सरकारी व व्यक्तिगत दस्तावेज जिनसे हमारे पूर्वजों के रहन–सहन एवं संस्कृति की जानकारी मिलती हो तथा भारत में आने वाले विदेशी यात्रियों द्वारा लिखे गए उनके अनुभव, जिनसे भारत के बारे में जो जानकारी मिलती हैं वे भी इतिहास के स्रोत कहलाते हैं यथा ह्वेनसांग व मेगस्थनीज के भारत संबंधी वर्णन।

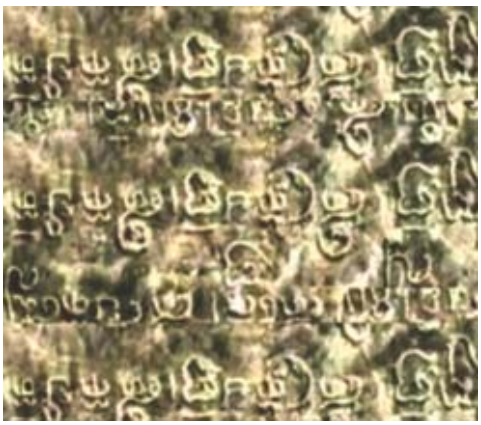

सरस्वती–सिन्धु सभ्यता से प्राप्त शिला पर उत्कीर्ण लिपि

पढ़ें एवं बताएँ :–

वंशावली लेखकों का इतिहास लेखन में किस प्रकार योगदान रहा ?

पुरा–ऐतिहासिक काल का मानव जीवन

मनुष्य के जन्म से लेकर लिपि के विकास तक का काल प्रागैतिहासिक काल अथवा पुरा–ऐतिहासिक काल कहा जाता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि करोड़ों वर्ष पूर्व पृथ्वी की उत्पत्ति हुई है और मनुष्य की उत्पत्ति लगभग 40 लाख वर्ष पूर्व हुई होगी। विश्व के अनेक स्थानों पर मानव की खोपड़ियाँ व हड्डियाँ प्राप्त हुई हैं वे लगभग डेढ़ लाख वर्ष पुरानी हैं। आज से दस हजार वर्ष पूर्व तक का काल पुरा–ऐतिहासिक काल

माना जाता है। इस काल में आदि–मानव झुण्ड बनाकर जंगलों में भोजन की तलाश में घूमता रहता था। जानवरों का शिकार करके खाना, गुफाओं में रहना, यही उसकी दिनचर्या थी। वह जंगली जानवरों के भय से गुफा के दरवाजे पर आग जला कर अपनी रक्षा करता था। पत्थर से ही आग जलाता, पत्थर के बर्तन एवं औजारों का उपयोग करता था। इसलिए इस काल को पाषाण काल या प्रस्तर का काल भी कहते हैं।

इस काल में आदिमानव घुमक्कड़ जीवन बिताता था। वह छोटे–छोटे समूहों में रहता था। समूह के नेता या मुखिया के साथ भोजन की तलाश में इधर–उधर घूमता रहता था और जब एक स्थान पर भोजन समाप्त हो जाता तब वह दूसरे स्थान पर चला जाता था।

वह पत्थरों के छोटे–छोटे टुकडे काटकर पतली धार वाले हथियार आरी, चाकू बनाकर उनका प्रयोग करने लगा। बड़े टुकड़ों से कुल्हाड़ी, हथौड़ी, वसूला आदि बनाकर लकड़ी काटने एवं अन्य उपयोग में लेने लगा। बाद में धीरे–धीरे इन्हीं पत्थर के औजारों में लकड़ी का हत्था डालकर और अच्छी तरह उपयोग में लेने लगा।

स्थायी जीवन का आरंभ

जैसे–जैसे मानव को अपने आस–पास की वस्तुओं का ज्ञान होता गया, वैसे–वैसे वह अपने लिए और अधिक सुविधाएँ जुटाने लगा। प्रारंभ में मनुष्य को कपड़े पहनने का ज्ञान नहीं था। वह पेड़ की छाल, बड़े–बड़े पत्तों एवं जानवरों की खाल से ठंड के समय अपना बचाव करता था। बाद में वह जानवरों को पालना, पौधे उगाना, अन्न पैदा करना आदि सीख गया, जिससे उसका घुमक्कड़ जीवन समाप्त हो गया और वह एक स्थान पर झोंपड़ी बनाकर रहने लगा और वहीं खेती करने लगा। उसने कुत्ते, बकरी, भेड़ आदि जानवरों को पालतू बना लिया और उनसे अपने कार्य में सहयोग लेने लगा। धीरे–धीरे मानव ने धातु की खोज की। पहले ताँबा बाद में जस्ता फिर सीसा खोजा गया। कुछ स्थानों पर ताँबे की कुल्हाड़ी मिलने से पता चला है कि पत्थर के बाद मनुष्य ने धातुओं में सर्वप्रथम ताँबे की खोज की।

स्थायी जीवन जीते हुए उसने पेड़ के मोटे तने को लुढ़कते हुए देखकर पहिया बनाना सीखा, जिससे गाड़ी बनाकर उपयोग में लेने लगा। पत्थर की चाक बनाकर मिट्टी के बर्तन बनाने लगा। गेहूँ, जौ और कपास की खेती करना, झोंपड़ी बनाकर रहना, जानवर पालना आदि कार्य सीखकर वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने लगा।

जैसे–जैसे मानव और समझदार होने लगा, वैसे–वैसे प्रकृति की उपासना, कपड़े बुनना आदि कार्य करने लगा। इस प्रकार पूर्व पाषाण काल से ताम्रकाल तक आते–आते मानव का रहन–सहन आदि पूर्व अवस्था से काफी आगे बढ़ गया था।

आओ करके देखें :

आदि मानव ने क्या–क्या सीखा, क्या–क्या खोजा व उसने क्या–क्या आकृतियाँ या उपयोगी चीजें बनाई? अपने अध्यापक की सहायता से सूची बनाएँ।

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता

आदिमानव ने जब कृषि करना, पशु पालना और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करना सीख लिया तब छोटे–छोटे एवं कुछ बड़े गांव बसते गए। इनमें से कुछ लोग अपनी आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने लगे व अपनी उत्पादित वस्तु दूसरों को देकर अपनी जरूरत की वस्तुएँ उनसे लेने लगे। इस प्रकार धीरे–धीरे व्यापार का प्रचलन हुआ और नगर बसने प्रारंभ हो गए। नए नगर ऐसे स्थानों पर बसे जहाँ उपजाऊ भूमि एवं पर्याप्त पानी था। अतः सिन्धु–सरस्वती के मैदानी भागों में नगर सभ्यता का विकास हुआ। सर्वप्रथम 1922 ई. में पंजाब के हड़प्पा तत्पश्चात् सिन्धु के मोहनजोदड़ो नामक स्थानों पर खुदाई में इस नगर सभ्यता का पता चला। बाद में अन्य स्थानों पर भी खुदाई करने से ऐसी ही सभ्यता व संस्कृति वाले स्थान मिले।

सिन्धु नदी–घाटी

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के प्रमुख स्थल

मोहनजोदड़ो, हड़प्पा, कोटदीजी एवं चन्हूदड़ो वर्तमान में पकिस्तान में हैं। भारत के पंजाब में चण्डीगढ़ के पास रोपड़, गुजरात में लोथल व धोलावीरा, राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में कालीबंगा स्थल हैं, जहाँ फैली नगर सभ्यता को सिन्धु–सरस्वती घाटी सभ्यता या हड़प्पा संस्कृति कहते हैं, क्योंकि इन सभी स्थानों से प्राप्त अवशेष हड़प्पा से प्राप्त अवशेषों से मिलते–जुलते हैं। यह संस्कृति संपूर्ण सिन्ध, बलूचिस्तान पूर्वी और पश्चिमी पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात और उत्तरी राजस्थान में फैली हुई थी। भारत का मानचित्र देखने से पता चलेगा कि इस संस्कृति का भौगोलिक विस्तार बहुत बड़ा है। यह संस्कृति ईसा से 2500 वर्ष एवं वर्तमान से 4500 वर्ष पुरानी मानी जाती हैं।

सरस्वती नदी

सरस्वती नदी का भारतीय संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इसके तट पर वेदों की रचना होने का प्रामाणिक विवरण प्राप्त होता है। यह कहना उचित होगा कि वैदिक संस्कृति का जन्म इसी नदी के किनारों पर हुआ था। इस नदी का उद्‌गम स्थल शिवालिक पहाड़ी से माना जाता है। यह नदी हरियाणा ,राजस्थान में होती हुई कच्छ की खाड़ी में गिरती थी। कालान्तर में यह नदी लुप्त हो गई। वैसे प्राचीन साहित्य में इस नदी को सिन्धु नदी की माँ कहा गया है। नवीन खोजों से पता चलता है कि सरस्वती नदी घाटी पर सुसंस्कृत एवं सुव्यवस्थित सभ्यता का प्रादुर्भाव हुआ था। सेटेलाइट की तस्वीरों में इस नदी का सम्पूर्ण मार्ग स्पष्ट दिखाई देता है।

सिंधु–सरस्वती सभ्यता से प्राप्त मोहरें

सिन्धु –सरस्वती सभ्यता से प्राप्त कलाकृतियाँ

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता का नगर नियोजन

इस सभ्यता की सबसे विशेष बात थी, यहाँ की विकसित नगर निर्माण योजना। हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ो दोनों नगरों के अपने दुर्ग थे, जहाँ शासक वर्ग के परिवार रहते होगें। प्रत्येक नगर में दुर्ग के बाहर एक उससे निम्न स्तर का शहर था, जहां ईंटों के मकानों में नगर के अन्य लोग रहते होंगे। इन नगर भवनों के बारे में विशेष बात यह थी कि ये जाल की तरह फैले हुए थे। यानी सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थी और नगर आयताकार खंडों में विभक्त हो जाता था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि बाढ़ या आक्रमण के समय वे गढ़ में ऊँचाई पर जा कर शरण लेते होंगे।

हड़प्पा के दुर्ग में सबसे अच्छी इमारतें धान्यागारों की थी। ये आयताकार में नदी के पास बनी होती थी। सम्भवतः नदी के रास्ते से माल नावों से लाया जाता होगा और गोदामों में रखा जाता होगा। नगर के इसी भाग में भट्टियाँ थीं जहाँ धातुकार ताँबे, काँसे, टीन आदि वस्तुएं तैयार करते होंगे।

खुदाई में सभा भवन, बाजार, चौक, स्नान कुण्ड आदि मिले हैं जो उनकी नगर नियोजन की सुव्यवस्थित योजना की जानकारी देते हैं।

भवन

नगर का जो भाग जनसाधारण के रहने के लिए था, वह योजनाबद्ध तरीके से बसाया गया था। भवन में ईंटों की मोटी दीवारें, खिड़कियाँ और दरवाजे अधिक पाए गए हैं। तेल के बड़े–बड़े मटके, रसोई के पास नाली, जानवरों को रखने के स्थान भी भवनों में पाए गए हैं। कुछ घरों में कुए भी प्राप्त हुए हैं। इससे पता चलता हैं कि घर के भीतर पानी सदैव उपलब्ध रहता था। मकानों में स्नानागार भी मिले हैं।

खुदाई से पता चलता है कि इस सभ्यता में तीन सामाजिक वर्ग रहते होंगे। एक शासक वर्ग जो दुर्ग में रहते थे, दूसरे व्यापारी जो शहर के दूसरे भाग में, तीसरे मजदूर वर्ग एवं आस–पास के किसान जो अन्न पैदा करते और गाँवों में रहते थे। खण्डहरों से पता चलता है कि वे भवन अपनी आवश्यकता के अनुरूप बनाते थे। भवन खुले, चौड़े एवं बड़े थे। घर का गन्दा पानी निकालने के लिए नाली प्रायः जमीन में दबाकर बनाई जाती थी।

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के पुरावशेष

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के सभी स्थलों की खुदाई में जो वस्तुएँ प्राप्त हुई है उनमें समानता है। उन वस्तुओं से उस समय के नागरिकों के रहन–सहन एवं जीवन स्तर का पता चलता है। प्राप्त अवशेषों के आधार पर इस नगर सभ्यता को बहुत अधिक विकसित माना जा सकता है।

आओ करके देखें–

सिन्धु–सरस्वती घाटी सभ्यता के नगर नियोजन की प्रमुख विशेषताओं की सूची बनाएँ।

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता का लुप्त होना

ऐसा माना जाता है कि यह संस्कृति लगभग 1000 वर्ष तक बनी रही होगी। ये नगर कैसे नष्ट हुए इसके कोई प्रमाण नहीं मिलते हैं, पर शायद बाढ़ या किसी महामारी अथवा प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प आदि से ये विकसित नगर समाप्त हो गए होंगे।

सिन्धु–सरस्वती सभ्यता की समकालीन विश्व सभ्यताएँ

सिन्धु –सरस्वती सभ्यता के समान ही विश्व के अन्य देशों में भी इसी प्रकार नदी–घाटियों के पास नगरों का विकास हुआ था। उनमें से कुछ नदी–घाटी सभ्यताओं को विद्वान् हमारी सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के साथ ही विकसित होने वाली सभ्यता मानते हैं।

कुछ प्रमुख समकालीन विश्व सभ्यताएँ

1. मिश्र की नील नदी घाटी सभ्यता– अफ्रीका के उत्तर पश्चिम मिश्र क्षेत्र में नील नदी के दोनों किनारों पर यह सभ्यता फली–फूली।
2. मेसोपोटेमिया की दजला– फरात सभ्यताः–वर्तमान ईराक के दोआब (मेसोपोटेमिया) स्थान पर दजला एवं फरात नामक नदियों के भू–भाग पर यह सभ्यता विकसित हुई। इसी क्षेत्र में सुमेरिया, बेबीलोनिया और असीरिया आदि सभ्यताओं का भी विकास हुआ।
3. चीन की ह्वाङहो नदी सभ्यता– चीन की ह्वाङहो नदी के निचले हिस्से के मैदानी इलाकों में जहाँ उपजाऊ दुम्मट मिट्टी पाई जाती थी, वहाँ इस सभ्यता का विकास हुआ।

राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल

कालीबंगाः– राजस्थान के हनुमानगढ़ जिले में कालीबंगा नामक स्थान पर 1961 में दो टीलों की खुदाई में पुरा–ऐतिहासिक काल के अवशेष प्राप्त हुए हैं। वर्तमान घग्घर नदी के किनारे पर स्थित इन टीलों से खुदाई में जो सामग्री प्राप्त हुई है वह हड़प्पा संस्कृति से मिलती जुलती है।

आहाड़ः– उदयपुर की बेड़च नदी के किनारे पर आहाड़ नामक बस्ती ताम्र नगरी के नाम से प्रसिद्ध थी, इसी बस्ती के पूर्व दिशा में मिट्टी के टीलों पर खुदाई में पाषाण युग एवं ताम्र युग के पत्थर, ताँबे और मिट्टी के बर्तनों के अवशेष मिले है।

गिलूण्डः–उदयपुर से 95 कि.मी. उत्तर पूर्व में गिलूण्ड (राजसमन्द) नामक स्थान पर एक टीले की

खुदाई में आहाड़ के समान अवशेष प्राप्त हुए हैं। आहाड़ एवं गिलूण्ड दोनों स्थलों की सभ्यता आहाड़ संस्कृति के नाम से जानी जाती है।

बागौरः– भीलवाड़ा जिले के बागौर नामक स्थान पर कोठारी नदी के किनारे पाषाण एवं ताम्रकालीन उपकरण एवं पुरावशेष एक टीले की खुदाई में प्राप्त हुए हैं। यह बनास संस्कृति के नाम से जाना जाता है।

बालाथलः– उदयपुर के पूर्व में 42 कि.मी. दूर वल्लभनगर के निकट बालाथल नामक गाँव में एक टीले की खुदाई में ताम्र–पाषाण कालीन बर्तन, मूर्तियाँ एवं अन्य ऐतिहासिक अवशेष प्राप्त हुए हैं। ये अवशेष भी आहाड़ संस्कृति का विस्तार है।

उत्खनन से प्राप्त वस्तुएँ

नोहः– पूर्वी राजस्थान के भरतपुर शहर से 5 कि.मी. दूर नोह नामक स्थान पर तांबे और हड्डियों के उपकरण, लोहे की कुल्हाड़ी इत्यादि प्राप्त हुए हैं, जो ताम्र युग के माने जाते है।

चन्द्रावतीः– (आबू–सिरोही) माउण्ट आबू की तलहटी में आबूरोड़ के निकट चन्द्रावती नामक स्थान पर ऐसे पुरावशेष प्राप्त हुए है जो प्राचीन मानव जीवन के निवास– आवास और उनके जीवन के विविध पक्षों पर जानकारी देते हैं। चन्द्रावती पुरामध्यकाल में एक अत्यन्त महत्व का स्थल था। यहाँ चल रहे उत्खनन से किले के अवशेष एवं अनाज संग्रह के कोठार मिले हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ एक विशाल दुर्ग था। यह परमार वंश की राजधानी थी।

पछमताः– (राजसमंद) उदयपुर से 100 कि.मी. दूर पछमता गांव में पुरातात्विक खुदाई के दौरान पुरावशेष प्राप्त हुए हैं। यह गांव गिलूण्ड के पास है एवं आहाड़ बनास संस्कृति का एक महत्वपूर्ण स्थल है। पछमता मेवाड़ क्षेत्र की आहाड़ बनास सभ्यता से संबंधित है जो कि हड़प्पा के समकालीन है।

यहाँ कई कलात्मक वस्तुएँ जैसे नक्काशीयुक्त जार, सीप की चुड़ियाँ, टेराकोटा के मनके, शंख और जवाहरात जैसे लेपिस लेजूली (यह अर्द्ध कीमती पत्थर अफगानिस्तान के बदख्शां में पाया जाता है) नीले रंग का बहुमूल्य पत्थर, कई प्रकार के मिट्टी के बर्तन और दो भट्टियाँ या चूल्हें मिले हैं।

गणेश्वरः– सीकर जिले में काँतली नदी के तट पर इस सभ्यता स्थल से ताम्र पाषाणकाल की वस्तुएँ भारी मात्रा में प्राप्त हुई है।

बैराठः– जयपुर जिले में स्थित बैराठ विभिन्न युगों में विकसित सभ्यता स्थल रहा है। महाभारतकाल में यह मत्स्य जनपद की राजधानी था। यहाँ से सम्राट अशोक के शिलालेख भी प्राप्त हुए है।

राजस्थान में कई पूर्व –हड़प्पा एवं हड़प्पाकालीन स्थल है जैसे करनपुरा, बिजनौर और तरखान वाला डेरा। ऐसे 100 पुरास्थल मिले है, इनमें से 6 का उत्खनन हो चुका है।

आओ करके देखें–

राजस्थान में सभ्यता के नए उत्खनन स्थलों के बारे में अध्यापक की सहायता से जानकारी प्राप्त कर संगृहीत कीजिए।

शब्दावली

शिलालेख	–	पत्थर या धातु पर लिखे हुए अभिलेख
धान्यागार	–	अनाज रखने का स्थान
नृवंश	–	मानव जाति

अभ्यास प्रश्न

प्रश्न एक व दो के सही उत्तर कोष्ठक में लिखिए –

1. सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे पहला उत्खनित स्थान कौनसा था ?
   (अ) मोहनजोदड़ो (ब) हड़प्पा
   (स) कालीबंगा (द) लोथल ( )
2. सिंधु सभ्यता ईसा से कितने वर्ष पुरानी मानी जाती है ?
   (अ) 2000 वर्ष (ब) 5000 वर्ष
   (स) 2500 वर्ष (द) 4000 वर्ष ( )
3. इतिहास को जानने के प्रमुख स्रोत कौन–कौन से है?
4. आदिमानव का जीवन कैसा था ?
5. आदिमानव के प्रमुख हथियार एवं औजार कौन–कौन से थे ?
6. क्या कारण था कि प्राचीन सभ्यताएँ नदी किनारे मैदानों में पनपी ?
7. सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के प्रमुख स्थल कौन से हैं ?
8. सिन्धु–सरस्वती सभ्यता के नगर नियोजन पर टिप्पणी लिखिए।
9. सरस्वती–सिन्धु सभ्यता की समकालीन विश्व संस्कृतियों पर टिप्पणी लिखिए।
10. राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल कौन–कौन से है ? वर्णन कीजिए।

गतिविधि

1. राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थलों के चित्रों का संकलन कीजिए।
2. विभिन्न प्रकार के पत्थरों को इकट्ठा कर यह जानें कि क्या इनसे औजार व हथियार बनाये जा सकते हैं? कुछ औजार एवं हथियार बनाकर प्रदर्शित कीजिए।